सीमित सच को पूर्ण सत्य न मानें

मीडिया जनित जानकारियाँ तथा विचार असंख्य लोगों तक पहुंचते हैं। जहां और जिन लोगों तक पहुंचते हैं, वहां से फिर लोगों से लोगों तक का सफर तय करते हुए एक नई सूचना का रूप ले लेते हैं। यह सब एक से अधिक चरणों में होता है। ऐसी जानकारी अपने प्रथम माध्यम या मीडिया की जानकारी से प्राय: भिन्न तो हो जाती है पर कही जाती है मीडिया से ही प्राप्त जानकारी। मीडिया की जानकारियों को लोग प्राय: सत्य मानते हैं और उसे सत्य मानते हुए उस पर प्रतिक्रिया भी करते हैं। यह प्रतिक्रिया भावनाओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों के साथ जुड़कर काफी मजबूत और सक्रिय, क्रियाशील हो जाती है। ऐसी सक्रियता लोगों की मदद करती है या लोगों के बीच मार-काट भी मचा देती है। दादरी की घटना ऐसी ही है पर वह अकेली नहीं है। ऐसी अनेकों घटनाएँ तथा जानकारियाँ पहले भी अनुभव की जाती रही हैं। लालू या रघुवंश प्रसाद के बयान से जो प्रतिक्रियायें पैदा हुईं उन्होंने भी तो नकारात्मक सक्रियता का ही प्रसार किया। ये सब जानकारियाँ व्यक्ति जनित थीं, जिन्हें मीडिया का सहारा मिला था। व्यक्ति जनित यह जानकारियां भी पूरी तरह से सत्य नहीं थीं पर सत्य की तरह ही प्रस्तुत हुईं और मीडिया ने उन्हें कई गुणित लोगों तक फैलाकर उस विवाद को द्वंद में बदल दिया। उसमें मारकाट नहीं हुई पर नफरत और भावनाओं पर तो चोट पहुंची ही।

जानकारियाँ या विचार, माध्यम से ही प्रसारित होते हैं। उन्हें फैलने या दूसरे तक जाने के लिए माध्यम का सहारा लेना बाध्यता है। वह माध्यम चाहे तकनीक से विकसित हो या व्यक्ति के रूप में हो, उस माध्यम का कंटेंट चयन कभी भी पूर्ण सत्य नहीं होता है। वह अपना नजरिया, विश्वास, रुझान, भावना आदि के साथ न केवल संयुक्त होता है, वरन इन्हीं सब से सीमित भी होता है। मीडिया के अध्येता इसे 'चयनित नजरिया' या सिलेक्टिव परसेप्शन कहते रहे हैं। तकनीक की भी सीमा है मसलन केमरा अपने फोकस क्षेत्र को ही तो बता पाता है। वह सम्पूर्ण दृश्य को कहाँ बता सकता है? प्रसारण या संचार तकनीक भी इनकोडिंग और डिकोडिंग यानी कथ्य को ऊर्जा में बदलने में भी अपनी सीमाओं में ही तो काम कर पाती है। ऐसे ही व्यक्ति अपनी जानकारियां, अपने विश्वास, रुझान आदि के आधार पर ही तो सूचनाओं को ग्रहण और व्याख्या कर पाता है। यह उसकी सीमा है। सामान्यत: कोई भी माध्यम अपनी इन सीमाओं को कुछ अनुसंधान, नवाचार आदि से अद्यतन नहीं कर पाता और करता भी है तो वह सतत नहीं होता रहता है। इसलिए सच तो यह है कि व्यक्ति हो या तकनीकी माध्यम, जिसे जनसंचार माध्यम कहते हैं, उसे अपनी इन सीमाओं के कारण, अपनी अभिव्यक्ति या प्रसारण में संयम बरतना आवश्यक है। महावीर इसी को स्यात् कहते हैं और बुध्द इसे संयम-वाणी का

संयम कहते हैं। बहुत ईमानदारी से सोचें कि क्या इस तरह का संयम बरता जाता है। सच यही है कि ऐसा संयम नहीं बरता जाता। इस पर कहा तो यह जाता है कि 'सबसे पहले कौन कहे' इस प्रतिस्पर्धा में ऐसा संयम तो क्या, आधा-अधूरा तथ्य भी सच की तरह प्रसारित होता रहता है। इस सच से मीडिया के लोग अपरिचित नहीं हैं।

यदि यह सच है कि माध्यम, जिसमें व्यक्ति भी शामिल है, अपनी प्राप्त जानकारी या विचार को बिना सम्पादन के प्रसारित करने के लिए ही है, बाध्य है या ऐसा करना उसका नैसर्गिक स्वभाव है तब तो इस पर यह सब कुछ कहना बेमानी है। संस्कृति, नीति, मानवीय मूल्य तो यह कहते रहे हैं कि जो भी बोला जाये वह तोलकर बोला जाये। ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय"। फ्रेंकलिन ने तो अपनी सफलता का आधार ही वाणी को बताया और कहा है कि किसी के प्रति अप्रिय न बोला जाये और जो बोला जाये वह उसकी अच्छाइयों के लिए ही बोला जाये। अनियंत्रित वाणी बोलने वाले को जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं होती है। लेखक शाह नवाज सिद्दकी तो कहते हैं ईश्वर ने हमें धरती पर प्रेम फैलाने के लिए ही भेजा है। दादा भगवान कहते हैं कि सत्य, प्रिय, हितकर और मित चार गुणाकार हो तो ही सत्य कहलाता है। तात्पर्य यह है कि अभिव्यक्ति को सत्य और हितकर होना चाहिये। यही सब कहते रहे हैं। सच यह भी है कि सत्य विशेषकर पूर्ण सत्य को तत्काल नहीं पाया जा सकता। अत: माध्यम को अपने प्रसारण के संबंध में संयम बरतना होगा।

माध्यम का मकसद भी तो सच और हितकारी सच बताना ही है। ऐसे में प्रतिस्पर्धा या बाजार अथवा न्यस्त स्वार्थ का हित देखने का मोह छोड़ना होगा। मीडिया केवल मुनाफे के लिए ही तो नहीं है। मुनाफा हो पर वह समाज या व्यक्ति के अहित की कीमत पर हो तो वह मीडिया की न तो नीति होगी और न ही वह मीडिया का मकसद होगा। इसे समझना जरूरी है।इस समझ के साथ इस बात के लिए भी तैयार रहना होगा कि जो जानकारी अधूरी है, व्यापक हित में नहीं है, समाज का अहित हो सकता है, लोगों के बीच नफरत और द्वेष फैल सकता है, तो ऐसी जानकारी को न दिया जाना ही श्रेयस्कर है। ऐसी जानकारी रोकने में टीआर पी भी प्रभावित नहीं होगी, यह विश्वास रखना होगा। हो सकता है तत्काल आप पीछे हो जायें पर बाद में आपको जो आगे गये हैं उनसे अधिक विश्वसनीयता और भरोसा मिल सकेगा।

० ० ०